विचार बिन्दु

अतिथि जिसका अन्न खाता है, उसके पाप धुल जाते हैं। –अथर्ववेद

जाति आधारित सभी आरक्षण सवर्णों, बाबासाहब अम्बेडकर और संविधान का सतत अपमान

देश में 70 वर्ष से चल रहे जातीय आधार पर शिक्षा व नौकरी में आरक्षण सवर्ण युवाओं की प्रतिभाओं को कुंठित कर हत्या करने समान है इसलिए जनता द्वारा सर्वत्र भर्तसना योग्य है। अब विवरण आगे पढ़िए ;–

स्वतंत्रता के पश्चात् 26 जनवरी 1952 को भारत गणतंत्र राज्य बना, इसी दिन देश ने अपना संबिधान लागू किया और प्रदेश में विधान सभाये गठित कर विधायकों के चुनाव कराये गए तथा संसदीय प्रणाली के लिए लोक सभा गठन और उसके सांसदों के चुनाव कराये गए। इस प्रकार लोक सभा व् विधान सभा के माध्यम से शासन पद्धति विकसित कर प्रशासन आरम्भ किया गया। संविधान की रचना करने में वैसे तो कुछ विद्वान व्यक्तिओं की समिति थी जिसके अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी थे, फिर भी ढांचागत और विषयवार कार्य डॉ. अम्बेडकर को दिया गया क्योंकि सामाजिक और राजनैतिक पक्षों पर उनकी जानकारी अन्य सदस्यों से अपेक्षा अधिक थी, इसकी मुख्य वजह थी उनका इंग्लॅण्ड में रहकर अध्ययन। बाबा साहिब देश के वंचित समुदाय से आते थे लेकिन पढ़ाई में वे एक मेधावी छात्र रहे। आर्थिक विपन्नता के रहते आगे की पढ़ाई उनके लिए एक बड़ी बाधा थी, यह बात बड़ोदा नरेश गायकवाड़ को जब पता लगी तो उन्होंने अम्बेडकर जी को इंग्लॅण्ड पढ़ने के लिए भेज दिया और सभी वित्तीय भार स्वयं वहन किया।

इस बात को मैंने यहाँ इसलिए कहा कि आज़ादी के पश्चात् यह बात सभी जगह काफी प्रचारित की गई कि संपन्न व् उच्च वर्ग हमेशा से ही निम्न व् वंचित समुदाय का शोषण और प्रताड़ित करता रहा है जो कि सच्चाई से परे है। मैं मानता हूँ कि यदा-कदा कहीं ऐसे उत्पीड़न हुए होंगे लेकिन यह कोई आम बात नहीं थी। नरेश गायकवाड़ की तरह और भी इस प्रकार के उदाहरण मिल जायेंगे।

मेरे विश्लेषण के अनुसार तत्कालीन प्रधान मंत्री अवश्य ही सवर्ण जाति से पहिले से ही पूर्वाग्रह से रुष्ट थे। उनकी भलाई के अथवा पक्ष के कोई कार्य नहीं करते, और न होने देते। कारण स्पष्ट था वे जानते थे कि ये लोग उनके सही-गलत सभी कार्यों में भागीदार नहीं बनेगे बल्कि अवसर आने पर उनकी मुखालफत भी करने से नहीं चूकेंगे। उनकी मानसिकता चीन से 1962 के युद्ध में देश की पराजय ने कुछ बदली, लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी और वे दो साल के अंदर ही परलोक सिधार गए। उस समय अनेक बाते उन्होंने देश को नहीं बताई। संचार माध्यमों के नगण्य विस्तार के कारण उनकी कार्यशैली जनता को अनुभव नहीं होती थी, ऐसी स्तिथि में उनकी सरकार क्या कर रही है और क्या सोच रखती है? इसका भान किसी को नहीं हुआ। संकुचित सोच का प्रधान मंत्री देश को मिला यह देश का दुर्भाग्य ही कहलायेगा।

फिर भी कुछ कार्य जैसे नदिओं पर बांध और उनसे सिचाई के लिए नेहरें तथा बांध पर हाइड्रो बिजली उत्पादन, स्टील उत्पादन व् प्रसंस्करण, अनेक कल कारखाने आदि नेहरू के विज़न का ही परिणाम है। उनकी शैली से किसी को तो अधिक प्रोत्साहन और अन्य को तिरस्कार या कुछ नहीं। ऐसी प्रवर्ति से देश की जनता में सवर्ण वर्ग उपेक्षित ही होता चला गया। नतीजन अब निर्धन व् उपेक्षित या वंचित के स्तर पर काफी कुछ मध्यम वर्ग स्पष्ट रूप से पहुंच चुका है। सरकार के पास ऐसी कोई सर्वेक्षण विधि नहीं है जो यह बता सके कि अब देश में स्पष्ट रूप से क्या दो आर्थिक वर्ग बन चुके हैं निम्न तथा धनिक? प्रति वर्ष बढ़ती गरीबों की संख्या यह बताती है कि मध्यम वर्ग से एक बड़ी संख्या प्रति वर्ष गरीव वर्ग में खिसक जाती है। मध्यम वर्ग से नीचे आकर ये गरीबों के हेतु विभिन्न योजनाओं का लाभ भी लेने लगते हैं। 70 वर्ष एक लम्बी अवधि है जहाँ अब आरक्षित समुदाय की चौथी पीढ़ी आरक्षण का लाभ ले रही है।

26 जनवरी 1952 को भारत गणतंत्र राज्य बना, इसी दिन देश ने अपना संबिधान लागू किया और प्रदेश में विधान सभाये गठित कर विधायकों के चुनाव कराये गए तथा देश के स्तर पर संसदीय प्रणाली के लिए लोक सभा गठन और उसके सांसदों के चुनाव कराये गए। इस प्रकार लोक सभा व् विधान सभा के माध्यम से शासन पद्धति विकसित कर प्रशासन आरम्भ किया गया।

संविधान की रचना करने में वैसे तो कुछ विद्वान व्यक्तिओं की एक समिति थी जिसके अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी थे। फिर भी ढांचागत और विषयवार कार्य डॉ. अम्बेडकर को दिया गया क्योंकि सामाजिक और राजनैतिक पक्षों पर उनकी जानकारी और पकड़ अन्य सदस्यों से अपेक्षा अधिक थी इसकी मुख्य वजह थी उनका इंग्लॅण्ड में रहकर अध्ययन। बाबा साहिब देश के वंचित समुदाय से आते थे लेकिन पढ़ाई में वे एक मेधावी छात्र रहे आर्थिक विपन्नता के रहते आगे की पढ़ाई उनके लिए एक बड़ी बाधा थी। यह बात बड़ोदा नरेश गायकवाड़ को जब पता लगी तो उन्होंने अम्बेडकर जी को इंग्लॅण्ड पढ़ने के लिए भेज दिया और सभी वित्तीय भार वहन किया।

इस बात को मैंने यहाँ इसलिए कहा कि आज़ादी के पश्चात् यह बात सभी जगह काफी प्रचारित की गई कि संपन्न व् उच्च वर्ग हमेशा से ही निम्न व् वंचित समुदाय का शोषण और प्रताड़ित करता रहा है जो कि सच्चाई से परे है। मैं मानता हूँ कि यदा-कदा कही ऐसे उत्पीड़न हुए होंगे लेकिन यह कोई आम बात नहीं थी। मेरे विश्लेषण के अनुसार तत्कालीन प्रधान मंत्री अवश्य ही सवर्ण जाति से पूर्वाग्रह से पीड़ित थे तथा सवर्ण जातिओं से काफी द्वेष रखते थे।

उनकी मानसिकता चीन से 1962 के युद्ध में देश की पराजय ने कुछ बदली, लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी और वे दो साल के अंदर ही परलोक सिधार गए। अपने कार्य काल में अनेक बाते उन्होंने देश को नहीं बताई। चूंकि संचार माध्यमों का तब विस्तार भी नगण्य था अन्यथा सरकार की कोई योजना कभी छिपती नहीं। ऐसी स्तिथि में उनकी सरकार क्या कर रही है और क्या सोच रखती है? इसका भान किसी को नहीं हुआ। परन्तु संकुचित सोच का पहला प्रधान मंत्री देश को मिला यह देश का दुर्भाग्य ही कहलायेगा।

> **सवर्ण जातिओं ने अपने लिए कहीं अन्य जगह जाकर शिक्षा और जीवकोपार्जन उचित समझा। फलस्वरूप गावों से ऐसी युवा पीढ़ी देश के बड़े शहरों और विदेशों में उन्नति की संभावनाएं तलाशने और जीवकोपार्जन हेतु धीरे-धीरे अपने मूल स्थान से पलायन करने लगी जो क्रम अभी भी जारी है।**

फिर भी कुछ कार्य जैसे नदिओं पर बांध और उनसे सिचाई के लिए नहरें तथा बांध पर हाइड्रो बिजली उत्पादन, स्टील उत्पादन व् प्रसंस्करण, अनेक कल कारखाने आदि नेहरू के विज़न का ही परिणाम है। परन्तु उनकी किसी को तो अधिक प्रोत्साहन और अन्य को तिरस्कार या कुछ नहीं ऐसी प्रवर्ति से जनता में सवर्ण वर्ग उपेक्षित ही होता चला गया। वर्तमान सरकार की प्रवर्ति भी शासन में नौ वर्ष रहते पुराने ढर्रे के सामान ही प्रतीत हो रही है।

ऐसे में भविष्य में कुछ समय पश्चात् नए बने धनिक वर्ग से आरक्षण हटा कर निम्न वर्ग को देना ही पड़ेगा क्योंकि विगत समय का सवर्ण अब गरीब वर्ग में आ चुका है। प्रति वर्ष बढ़ती गरीबों की संख्या यह बताती है कि मध्यम वर्ग से एक बड़ी संख्या गरीब वर्ग में खिसक जाती है। मध्यम वर्ग इसलिए सिकुड़ता जा रहा है। वहीं गरीबों के हेतु बनी विभिन्न योजनाओं का लाभ अब नए गरीबों को मिलने लगा है अथवा मिलने वाला है।

भारत में लोकसभा आदि की कार्यवाही संबिधान की दुहाई और सपथ से आरम्भ होती है। देश में इस समय 776 सांसद, दोनों सदनों को मिलाकर हैं, इनके अतिरिक्त 4120 विधायक और 462 ऍम.एल.सी. हैं। परिसीमन के आधार पर गठित चुनाव क्षेत्रों से ये जनप्रतिनिधि जनता चुन कर 5 वर्ष की अवधि के लिए लोकसभा और विधान सभाओं में भेजती है। इन सभाओं की कार्यवाही एक वर्ष में तीन बार कुछ निर्धारित दिनों के लिए चलती है जिनमे विधायी मसले निपटाए जाते हैं।

दोनों ही सदनों में बहुधा आधे से कम ही सदस्य उपस्तिथ रहते हैं। इतनी कम सदस्य संख्या से ही महत्वपूर्ण निर्णय कर लिए जाते हैं। वही कतिपय सदस्य ही संवाद में संलग्न होते हैं और अन्य चुप बैठे कार्यवाही देखते रहते हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि सपथ संविधान की और अनर्गल बातो से सदन का समय नष्ट सदन में आम दृश्य होता है देश हित का न तो कोई प्रस्ताव और न ही संवाद से कोई अच्छा योगदान। बल्कि सरकार विरोधी वक्तव्य देकर रचनात्मक सुझाव तो अनेकों के दिमाग में आते ही नहीं। आश्चर्य होता है कि आरक्षित वर्ग से आने वाले प्रतिनिधि भी बहुत कम विधायी कार्यों एवं सम्बाद में भाग लेते हैं। अपने क्षेत्र के विकास वास्ते भी उनके प्रस्ताव कम ही होते हैं।

मूल संबिधान में डॉ अम्बेडकर जी ने देश की आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक और राजनैतिक असमानता को दृष्टि में रख कर कुछ आरक्षण के प्रावधान किये जो केवल दस वर्ष के लिये मान्य थे। उनका मानना था कि इस अवधि में निम्न और वंचित वर्ग शैक्षणिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से संतोषजनक सीमा तक उठ जायेगा, इसलिए उन्होंने प्रारम्भिक अवस्था में आरक्षण की अवधि बढ़ाने की भी कोई अनुसंशा संविधान अथवा उसके उपरांत नहीं की। यह आरक्षण अनुसूचित व् अनुसूचित जनजाति के समुदाय के लिए ही प्रस्तावित था जो लगभग 28 से 30 वर्षों से अनवरत अभी तक चल रहा है।

वर्ष 1990 के आसपास मंडल आयोग की रिपोर्ट के आधार पर देश भर में उठा आंदोलन हुए जिसमे अनेक युवाओं की मृत्यु हो गई। तत्पश्चात अन्य पिछड़ा वर्ग के नाम से 28 प्रतिशत आरक्षण अतिरिक्त लागू कर दिया बिना किसी आर्थिक सर्वे के। यह आरक्षण भी जाति आधारित ही हुआ। दुर्भाग्य से आर्थिक सम्पन्नता या विपन्नता का कोई भी मापदंड नहीं रखा गया। अभी भी कई जातियां आरक्षण के लिए आवाज उठा रही हैं। वहीं आरक्षित वर्ग और अधिक प्रतिशत बढ़ वाने की मांग कर रहा है। अत: आरक्षण पूर्व में साधारण खुजली होते हुए अब कोढ़ में बदल गया है।

आरक्षण के आरंभिक वर्षों में भारतीय समाज में जातीय विद्वेष बहुत बढ़ गया था। बाद में समय के साथ लोगों ने आपस मे मेलजोल तो बहाल कर लिया लेकिन मन से एक न हो सके। असंतोष तो मंडल आयोग लागू होने व् पिछड़ी जातिओं को 28 प्रतिशत आरक्षण से अधिक बढ़ा। सवर्ण जातिओं ने अपने लिए कही अन्य जगह जाकर शिक्षा और जीवकोपार्जन के लिए उचित समझा। फलस्वरूप गावों से ऐसी युवा पीढ़ी देश के बड़े शहरों और विदेशों में उन्नति की संभावनाएं तलाशने और जीवकोपार्जन हेतु धीरे-धीरे अपने मूल स्थान से पलायन करने लगी जो क्रम अभी भी जारी है।

वर्ष 1990 के लगभग सभी प्रकार की शिक्षा में विष्फोटक वृद्धि देश और विदेशों में हुई। लेकिन भारत में कम ही मेधावी सवर्ण युवा अपनी योग्यता और पसंद का कोई संसथान पा सके और न ही इक्षित विषय। समाज में अन्यों से पिछड़ने के भय से उन्होंने विदेशों यथा अमेरिका, कनाडा, यूके, जर्मनी, फ्रांस, चीन, जापान, ऑस्ट्रेलिया अदि जगहों पर शिक्षा तथा तदुपरांत वही कहीं नौकरी, व्यवसाय आदि में वातावरण उपयुक्त जानकर जीवकोपार्जन कर रहना शुरू कर दिया। देश से युवाओं की बड़ी-बड़ी पलटने विदेशो को जाने लगी। यह निश्चित है कि अधिकांश ऐसे युवा स्वदेश नहीं लौटेंगे और भारत उनकी प्रतिभाओं व् विशेषताओं का लाभ नहीं ले पायेगा।

यूक्रेन, पोलैंड, रूस, जर्मनी, स्विट्ज़रलैंड, और ऑस्ट्रेलिया के शिक्षा संस्थान देसी छात्रों को अपेक्षाकृत अधिक अनुकूल व् उपयुक्त प्रतीत हुए। यही नहीं दुश्मन देश चीन ने भी भारत के छात्रों को अपने देश में पढ़ाई के लिए आकर्षित किया और सुविधाएँ भी दी। भारत सरकार कभी भी यह प्रकाशित नहीं करती कि देश के कितने छात्र किन-किन देशों में और किस विषय की पढ़ाई के लिए जाते हैं। रूस यूक्रेन के युद्ध के समय जब भारतीय छात्रों को वहां से निकलना पड़ा और देश के दो मंत्रिओं को वहां भेजा गया ताकि भारत के छात्र वहां से सकुशल निकल स्वदेश लौट सके। देश सांस रोके इस निकासी को निहारता रहा इस उम्मीद में कि उनका लाडला कब लौट रहा है? अंततोगत्वा कुछ दुर्घटनाओं को छोड़ सभी वापिस लौट आये। यह दृष्टांत लिखना इसलिए आवश्यक हुआ कि देश की जनता जानें कि हज़ारों-लाखों की संख्या में देश के छात्र विदेशों में पढ़ने को क्यों मजबूर हैं? उस पर सरकार ऐसी स्तिथियाँ छुपाती क्यों है?

क्या सरकार की कोई जिम्मेदारी नहीं कि युवाओं की आवश्यकतानुसार उच्च शिक्षा का प्रबंध देश में ही करे? युवाओं के माता-पिता सरकार को टैक्स क्यों देते हैं? अनेक लोगों ने अपनी खेती, मकान, आभूषण आदि गिरबी रख या अनुबंध पर अथवा बेच कर अपने लाडलों की पढ़ाये यूक्रेन जैसे देशों में करानें अपनी यथा शक्ति दाव पर लगा दी? जब यूक्रेन से ही हज़ारों छात्र निकाले गए तब यह आभास हुआ कि अन्य देशों में भी भारतीय छात्र लाखों में होंगे?

मेरी देश के सभी युवाओ विशेष रूप से सवर्ण युवाओं को सलाह है कि वे जागरूक हों इस समस्या के प्रति और अन्यों को भी सतत जागरूक करते रहें। भारत उनका भी उतना ही है जितना अन्य वंचित गरीबों का और नेताओं का। कहावत है बिना रोये माँ भी बालक को दूध नहीं पिलाती। आश्चर्य की बात है कि यूक्रेन से छात्रों को निकालने के उपरांत देश के किसी सदन में ये मसला नहीं उठा कि युवा छात्रों को शिक्षा के लिए वहां इतनी बड़ी संख्या में क्यों जाना पड़ा? बेहद शर्मनाक। उच्च शिक्षा के अवसर अभी भी आम युवा की पहुंच से दूर हैं। जन प्रतिनिधिओं की ऊपर की मंज़िल क्या किराये के लिए सदैव खली रहती है?

अत: जागिये और इसी देश में संघर्ष कर अपना स्थान बनाइये यूक्रेन व् अन्य देशों में शिक्षा के लिए जाने की जरूरत नहीं है। आपकी ही सामूहिक शक्ति के कारण बाबू श्री जयप्रकाश नारायण जी ने तत्कालीन सरकार का ऐसा सूपड़ा साफ किया था कि जनता वर्ष 1977 भूलती नहीं उपेक्षित युवा 1977 का डंका हमेशा बजाते रहें। ताकि जिनको आपने चुनकर भेजा है उन पर वोट की तलवार हमेशा लटकती रहे। और आपका हक़ देश में ही आपको मिले। और सरकार ये सुबिधा आपको देश में ही सुलभ करने मज़बूर हो।

–अतिथि सम्पादक,
प्रो.डॉ. वीर बहादुर सिंह,
(पूर्व कुलपति एवं डेयरीविज्ञ महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी वि.वि., उदयपुर)

दाम्पत्य जीवन की पवित्रता का पर्व करवा चौथ

सनातन धर्मी महिलाएं कार्तिक कृष्णा चतुर्थी को दाम्पत्य जीवन की पवित्रता का पर्व, करवा चौथ अपने जीवन साथी के दीर्घायु, स्वस्थ और खुशहाल रहने के लिये व्रत रखकर शाम को चन्द्रमा के दर्शन कर उनको अर्क दे कर छलनी से अपने पति को देख कर अपने पति के हाथों से जल पीकर अपना व्रत खोलती हैं । करवा चौथ हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। यह भारत के जम्मू , हिमाचल प्रदेश, पंजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश और राजस्थान में मनाया जाने वाला पर्व है। यह पर्व सौभाग्यवती (सुहागिन) स्त्रियाँ मनाती हैं। यह व्रत सवेरे सूर्योदय से पहले लगभग 4 बजे से आरंभ होकर रात में चंद्रमा दर्शन के उपरांत संपूर्ण होता है। पति की दीर्घायु एवं अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति के लिए इस दिन भालचन्द्र गणेश जी की अर्चना की जाती है। संस्कृत में इसको करक चतुर्थी तेलुगु में अटल तद्दी कहा जाता हे ।

यह व्रत 12 वर्ष तक अथवा 16 वर्ष तक लगातार प्रति वर्ष किया जाता है। अवधि पूरी होने के पश्चात इस व्रत का उद्यापन (उपसंहार) किया जाता है। इस व्रत के समान सौभाग्यदायक व्रत अन्य कोई दूसरा नहीं है।

भारत देश में वैसे तो चौथ माता जी के कई मंदिर स्थित है, लेकिन सबसे प्राचीन एवं सबसे अधिक ख्याति प्राप्त मंदिर राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले के चौथ का बरवाड़ा गांव में स्थित है। चौथ माता के नाम पर इस गांव का नाम बरवाड़ा से चौथ का बरवाड़ा पड़ गया। चौथ माता मंदिर की स्थापना महाराजा भीम सिंह चौहान ने की थी।

करवा चौथ के व्रत संबंध में पौराणिक एवं लोक कथाएं हैं कहा जाता है कि शंकरजी ने माता पार्वती को करवा चौथ के व्रत का महत्व बताया था। इसके अलावा द्रौपदी ने अर्जुन के लिए यह व्रत रखा था। तभी से पत्नियां अपने पति

> ■ **क्या यह ठीक नहीं होगा कि पुरुष अपनी पत्नी के स्वस्थ और दीर्घ जीवन के लिये करवा चौथ का व्रत रख कर उसके संकल्पों को पूरा करवाने में सहयोग करें**

की सलामती के लिए यह उपवास रखती हैं। पौराणिक कथानुसार एक साहूकार के सात लड़के और एक लड़की थी। एक बार कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को सेठानी सहित उसकी सातों बहुएं और उसकी बेटी ने भी करवा चौथ का व्रत रखा। रात्रि के समय जब साहूकार के सभी लड़के भोजन करने बैठे तो उन्होंने अपनी बहन से भी भोजन कर लेने को कहा। इस पर बहन ने कहा- भाई, अभी चांद नहीं निकला है। चांद के निकलने पर उसे अर्घ्य देकर ही मैं आज भोजन करूंगी।

साहूकार के बेटे अपनी बहन से बहुत प्रेम करते थे, उन्हें अपनी बहन का भूख से व्याकुल चेहरा देख बेहद दुख हुआ। साहूकार के बेटे नगर के बाहर चले गए और वहां एक पेड़ पर चढ़ कर अग्नि जला दी। घर वापस आकर उन्होंने अपनी बहन से कहा- देखो बहन, चांद निकल आया है। अब तुम उन्हें अर्घ्य देकर भोजन ग्रहण करो। साहूकार की बेटी ने अपनी भाभियों से कहा- देखो, चांद निकल आया है, तुम लोग भी अर्घ्य देकर भोजन कर लो। ननद की

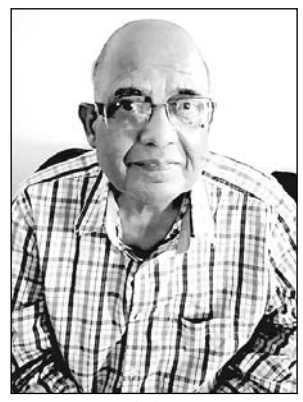

डा. जे.के. गर्ग

बात सुनकर भाभियों ने कहा- बहन अभी चांद नहीं निकला है, तुम्हारे भाई धोखे से अग्नि जलाकर उसके प्रकाश को चांद के रूप में तुम्हें दिखा रहे हैं। साहूकार की बेटी अपनी भाभियों की बात को अनसुनी करते हुए भाइयों द्वारा दिखाए गए चांद को अर्घ्य देकर भोजन कर लिया। इस प्रकार करवा चौथ का व्रत भंग करने के कारण चौथ माता साहूकार की लड़की पर क्रोधित हो गई। चौथ माता की अप्रसन्नता के कारण उस लड़की का पति उसके सुसराल में बीमार पड़ गया और सुसराल वालों के घर में बचा हुआ सारा धन उसकी बीमारी में खर्च हो गया। साहूकार की बेटी को जब अपने किए हुए दोषों का पता लगा तो उसे बहुत पश्चाताप हुआ। उसने गणेश जी से क्षमा प्रार्थना की और फिर से विधि-विधान पूर्वक चतुर्थी का व्रत शुरू कर दिया। उसने उपस्थित सभी लोगों का श्रद्धानुसार आदर किया और तदुपरांत उनसे आशीर्वाद ग्रहण किया।

इस प्रकार उस लड़की के श्रद्धा-भक्ति को देखकर चौथ माता प्रसन्न हो गई और उसके पति को जीवनदान प्रदान किया। उसे सभी प्रकार के रोगों से मुक्त करके धन, संपत्ति और वैभव से युक्त कर दिया। पूजा करते समय और कथा सुनते समय दो करवे रखने होते हैं, एक करवे में महिलाएं अर्घ्य देती हैं यानी जिसे उनकी सास ने दिया होता है और दूसरा वो जिसमें पानी भरकर बायना देते समय उसकी सास को देती हैं। करवा में रक्षा सूत्र बांधकर, हल्दी और आटे के सम्मिश्रण से एक स्वस्तिक बनाया जाता है। एक करवे को शुद्ध जल से और दूसरे करवे को से दूध भरते हैं और उसमें तांबे या चांदी का सिक्का डाल देते हैं। जब बहू व्रत शुरू करती है, तो सास उसे करवा देती है, उसी तरह बहू भी सास को करवा देती है। साधारण तय मिट्टी के करवा का उपयोग किया है किन्तु कई जगह स्टील के लोटे का प्रयोग भी किया जाता है।

सरगी--सरगी आम तौर पर पंजाबी समुदाय के लोगों में ज्यादा प्रचलित होती है, लेकिन दूसरे समुदाय के लोग भी इसका प्रयोग करते हैं। सरगी का मतलब है कि सास की ओर से बहू को करवा चौथ पर दी जाने वाली एक तरह की भेंट। यह भोजन की एक ऐसी थाली होती हैं जिसमें कुछ खास चीजें होती हैं जिसे खाने से भूख और प्यास कम लगती है और दिन भर ऊर्जा बनी रहती।। इन्हें खाने के बाद महिलाएं दिन भर निर्जला उपवास रखती है।

इसमें सूखे मेवे और फल होते हैं। साथ ही मिठाई होती है। अगर सास सरगी नहीं दे सकती तो बहू को पैसे भिजवा सकती है। सरगी में खाने के सामान के अलावा कपड़े, सुहाग की चीज, फेनिया, नारियल आदि रखे होते हैं। यह व्रत 13 अक्टूबर, 2022 को है। प्रकृति का नियम हैं कि समय परिवर्तनशील है समय के साथ आदमी की सोच भी बदलती है । आज हमारा संविधान सभी को समान अधिकार प्रदान प्रदान करता है चाहे वो पुरुष हो या स्त्री इसी प्रकार सभी के कर्तव्य भी समान होते हैं । नर और नारी जीवन रुपया रथ के दो पहिये हैं स्वस्थ सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये दोनों को स्वस्थ और कुशल होना जरूरी ऐ । क्या यह अधिक अच्छा नहीं होगा अगर पति भी इस पर्व पर अपनी पत्नी के सम्मान खुशाली और उसके स्वस्थ दीर्घ जीवन के लिए प्रार्थना करते हुए उसका हर काम में सहयोग करने की भावना को मूर्त रूप दें इसके लिये पुरुष अपनी पत्नी के स्वस्थ और दीर्घ जीवन के लिये करवा चौथ का व्रत रख कर उसको अपनी मर्जी से उसके द्वारा निर्धारित संकल्पों को पूरा करवाने में तन मन धन से उसकी सहायता और सहयोग करने का संकल्प लें।

डा. जे.के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा जयपुर

डॉ. दशरथ सिंह शेखावत 500 से अधिक बार हुए सम्मानित

खिरोड़, (निसं)। भारतीय सेना का जांबाज सैनिक, शिक्षा में विश्व रिकॉर्ड विजेता, भारत के शिक्षा रत्न सैनिक व राजस्थान के प्रमुख समाजसेवी प्रो. डॉ. दशरथ सिंह खिरोड़ ने देश विदेश में विभिन्न स्थानों, समाजों, समूहों, संस्थाओं तथा लोगों द्वारा अपनी व्यक्तिगत उपलब्धियों के आधार पर 500 से अधिक बार सम्मानित एक नया विश्व रिकॉर्ड बनाने में सफलता प्राप्त की है।

प्रो. खिरोड़ की यह महान उपलब्धि हार्वर्ड वर्ल्ड रिकॉर्ड में हाल ही में दर्ज हुई है। इससे पूर्व

> ■ **सर्वाधिक बार सम्मानित होने वाली उपलब्धि हावर्ड वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हुई**
>
> ■ **82 महत्वपूर्ण शैक्षिणक डिग्रियां प्राप्त कर चुके है प्रो. दशरथ सिंह**

भी इन्होंने 7 विश्व रिकॉर्ड बना कर भारतीय सेना एवं देश का नाम रोशन किया है।

प्रो. खिरोड़ दुनिया के सर्वाधिक शिक्षित व्यक्ति का खिताब अपने नाम कर चुके हैं। अब तक कुल 82 महत्वपूर्ण शैक्षिणक डिग्रियां प्राप्त कर चुके हैं। प्रो. दाशरथ सिंह खिरोड़ भारतीय सेना के वरिष्ठ सलाहकार हैं। प्रो. दशरथ सिंह झुंझुनूं जिले की नवलगढ़ तहसील के गांव खिरोड़ के रहने वाले हैं । इनके दादा बाघ सिंह शेखावत एवं पिता रघुवीर सिंह शेखावत भी जांबाज सैनिक और उत्कृष्ट समाजसेवी रहे हैं।

दशरथ सिंह शेखावत अपने घर से रवाना होकर करीब 12 किमी पैदल चलकर नवलगढ़ पहुंचकर और सब्जी मंडी में सब्जी बेचकर अपना काम चलाते हुए उच्च शिक्षा ग्रहण की। और पढ़ते पढ़ते ही सेना में भर्ती होकर देश के जांबाज सैनिक के रूप में भी कार्य किया है। सेना से सेवानिवृत्त होकर समाज सेवा जैसे कार्य भी किए और अब भी सेना में लीगल एडवाइजर के पद पर कार्यरत हैं। इधर खिरोड कस्बे वासियों ने डॉ. शेखावत की इन उपलब्धियों पर खुशी व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई प्रेषित की है।

डॉ. दशरथ सिंह शेखावत

वैदिक साहित्य में हैं विज्ञान और प्रौद्योगिकी के स्वयंसिद्ध सूत्र : राज्यपाल

बांसवाड़ा, (निसं)। वेद, वैदिक साहित्य और संस्कृत वांग्मय अपने आप में अनूठा और अपूर्व है। आज हम जिस विज्ञान और प्रौद्योगिकी और विज्ञानमय-तकनीक मय विश्व एवं

> ■ **वेद विज्ञान विस्तारीकरण व वैदिक गुरुकुल परिसर का शिलान्यास**
>
> ■ **'संस्कृत के ज्ञान से हमारी संस्कृति और सनातन जीवन पद्धति को जी सकेंगे**

विकास की बात करते हैं उन सबके प्राचीनतम सूत्र एवं विज्ञान हमारे वेदों और वांग्मय में सदियों पूर्व से ही विद्यमान है। उक्त उद्गार राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय के वेद विद्यापीठ विस्तारीकरण और वैदिक गुरुकुल परिसर के शिलान्यास अवसर पर व्यक्त किए।

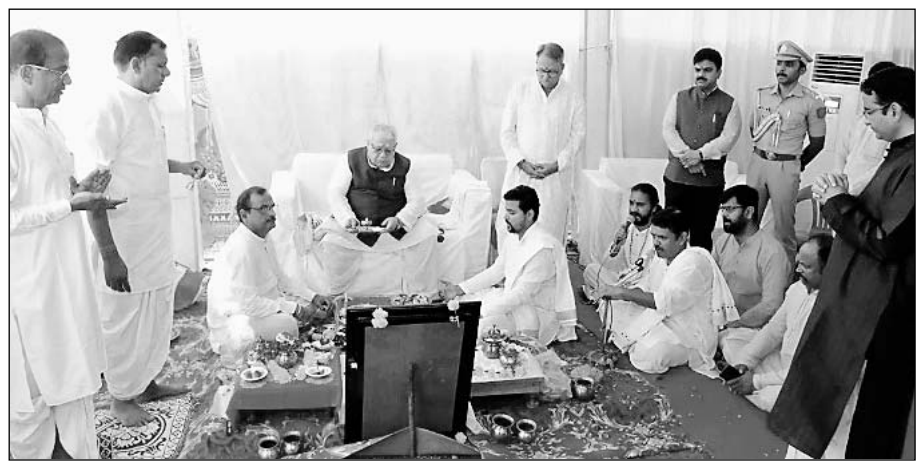

हवन-यज्ञ में आहुतियां देते राज्यपाल कलराज मिश्र।

उन्होंने कहा कि आज का चाहे अन्तरिक्ष, खगोल, भौतिक विज्ञान और विज्ञान की जिनती भी शाखाएं हों, उन सबका पूर्ण विकास और परिपाक वेदों में मिलता है। हमारे वेद आप्त हैं, इनमें दर्शित ज्ञान और वैचारिकी आज भी स्वयं सिद्ध हैं। यह सब ज्ञान-विज्ञान के सबसे बडे खजाने हैं आज इन खजानों का भलीभांति से अधिकाधिक उपयोग और विज्ञान, आविष्कार और अनुसन्धान में करने की महती आवश्यकता है।

इस यात्रा में संस्कृत भाषा का समुचित अध्ययन सबसे अधिक सहायक सिद्ध हो सकता है। संस्कृत से न केवल हमारी संस्कृति और सनातन जीवन पद्धति को जी सकेंगे अपितु इससे ज्ञान और विज्ञान के सबसे बडे खजाने से पूरा विश्व लाभान्वित हो सकता है।

राज्यपाल ने इस बात पर बल दिया कि इस महते उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वेद विद्यापीठ न केवल उच्च शिक्षा और शोध के नए क्षितिज उपलब्ध कराएंगे अपितु वैदिक गुरुकुल संस्कार परिमार्जन के साथ इस उद्देश्य के सबसे मजबूत आधारशिला तैयार करेंगे।

वेद विद्यापीठ निदेशक डॉ महेंद्र प्रसाद ने बताया कि वेद विद्यापीठ विस्तारीकरण और वैदिक गुरुकुल परिसर निर्माण के लिए शिलान्यास कार्यक्रम पूर्णत: वैदिक मंत्रोच्चार विधि से हुआ।

पंडित कीर्तिश भट्ट के मुख्य आचार्यत्व में वेद विद्यापीठ से जुड़े कर्मकांडी पंडितों ने संयुक्त रूप से किया। राज्यपाल ने मुख्य यज्ञमान रूप में कार्य को संपन्न किया।

राशिफल गुरूवार 13 अक्टूबर, 2022

पंडित अनिल शर्मा

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, चतुरथी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2079, कृत्तिका नक्षत्र सांय 6:41 तक, सिद्धि योग दिन 1:59 तक, बव करण दिन 2:30 तक, चन्द्रमा वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-वृष, मंगल-वृष, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-कन्या, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज यमघट योग सूर्योदय से सांय 6:41 तक है। आज करवाचौथ व्रत है। चन्द्रोदय जयपुर में रात्रि 8:21 पर होगा। आज दशरथ चतुरथी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:55 तक, चर 10:47 से 12:13 तक, लाभ-अमृत 12:13 से सांय 3:05 तक, शुभ 4:31 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:29, सूर्यास्त 5:57

मेष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

वृष
मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आवश्यक कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मिथुन
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि का भय बना रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कर्क
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों से धन लाभ होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कन्या
नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित अड़चनें अभी यथावत बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। परिवार में सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक
परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति में